दलहनी फसलों के अनुसंधान एवं वकिास पर दो दविसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ

चर्चा में क्यों?

17 अगस्त, 2022 को छत्तीसगढ़ के कृषमिंत्री रवदि्र चौबे ने इंदरिा गांधी कृषविश्विवद्यालय द्वारा भारतीय कृषअिनुसंधान परषिद, नई दलि्ली के सहयोग से आयोजति दोदविसीय रबी दलहन कार्यशाला एवं वार्षकि समूह बैठक का शुभारंभ कयिा।

प्रमुख बदिु

- इस दोदविसीय रबी दलहन कार्यशाला में चना, मूंग, उड़द, मसूर, तविड़ा, राजमा एवं मटर का उत्पादन बढ़ाने हेतु नवीन उन्नत कसि्मों के वकिास, अनुसंधान एवं उत्पादन तकनीकी पर वचिार-मंथन कयिा जा रहा है।
- उल्लेखनीय है कदिेश में दलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लयि अनुसंधान एवं वकिास हेतु कार्य योजना एवं रणनीततैयार करने के लयि आयोजति इस कार्यशाला एवं वार्षकि समूह बैठक में देश के वभिन्नि राज्यों के 100 से अधकि दलहन वैज्ञानकि शामलि हुए हैं।
- भारतीय कृषअिनुसंधान परषिद के उप महानदिशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने इस अवसर पर कहा ककिेंद्र सरकार द्वारा भारत को दलहन उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनर्भिर बनाने एवं इसका आयात कम करने के लयि वशिष प्रयास कयि जा रहे हैं, जसिके परणािमस्वरूप देश में इस वर्ष 2 करोड़ 80 लाख मीट्रकि टन दलहन उत्पादन होने की संभावना है। गौरतलब है कविर्ष 2016 में देश में 1 करोड़ 60 लाख मीट्रकि टन दलहन का उत्पादन होता था।
- उन्होंने दलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लयि इसकी रोगरोधी एवं उन्नतशील कसि्में उगाने तथा यंत्रीकरण के उपयोग में वृद्धकिरने पर ज़ोर दयिा।
- भारतीय कृषअिनुसंधान परषिद के सहायक महानदिशक डॉ. संजीव गुप्ता ने कहा कधिान के कटोरे के रूप में प्रख्यात छत्तीसगढ़ आज दलहन उत्पादन के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बना रहा है। उन्होंने इंदरिा गांधी कृषविश्विवद्यालय द्वारा दलहनी फसलों की नवीन उन्नतशील कसि्में वकिसति कयि जाने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कछित्तीसगढ़ में उगाई जाने वाली तविड़ा की फसल खाद्य सुरक्षा उपलब्ध कराने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमकिा नभिा सकती है।
- इंदरिा गांधी कृषविश्विवद्यालय के कुलपतडिॉ. गरीश चंदेल ने कहा कछित्तीसगढ़ में वर्तमान समय में लगभग 11 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में दलहनी फसलें ली जा रहीं हैं, जनिमें अरहर, चना, मूंग, उड़द, मसूर, कुल्थी, तविड़ा, राजमा एवं मटर प्रमुख हैं।
- इंदरिा गांधी कृषविश्विवद्यालय, रायपुर में दलहनी फसलों पर अनुसंधान एवं प्रसार कार्य हेतु तीन अखलि भारतीय समन्वति अनुसंधान परयिोजनाएँ - मुलार्प फसलें (मूंग, उड़द, मसूर, तविड़ा, राजमा, मटर), चना एवं अरहर संचालति की जा रहीं हैं, जसिके तहत नवीन उन्नत कसि्मों के वकिास, उत्पादन तकनीक एवं कृषकों के खेतों पर अग्रमि पंक्तप्रिदर्शन का कार्य कयिा जा रहा है।
- वश्विवद्यालय द्वारा अबतक वभिन्नि दलहनी फसलों की उन्नतशील एवं रोगरोधी कुल 25 कसि्मों का वकिास कयिा जा चुका है, जनिमें मूंग की 2, उड़द की 1, अरहर की 3, कुल्थी की 6, लोबयिा की 1, चना की 5, मटर की 4, तविड़ा की 2 एवं मसूर की 1 कसि्म प्रमुख हैं।
- कुलपतडिॉ. गरीश चंदेल ने कहा कविश्विवद्यालय द्वारा छत्तीसगढ़ की प्रमुख दलहन फसल तविड़ा की दो उन्नत कसि्में वकिसति की गई हैं, जो मानव उपयोग हेतु पूर्णत: सुरक्षति हैं। दलहनी फसलों में यंत्रीकरण को बढ़ावा देने हेतु वश्विवद्यालय द्वारा नए कृषयिंत्र वकिसति कयि जा रहे हैं।
- इस अवसर पर प्रदेश के कृषमिंत्री रवनि्द्र चौबे ने कहा कछित्तीसगढ़ में दलहन फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लयि दलहन उगाने वाले कसिानों को वशिष प्रोत्साहन दयिा जा रहा है, जसिके तहत धान की जगह दलहन उत्पादन करने वाले कसिानों को प्रतएिकड़ नौ हज़ार रुपए का अनुदान दयिा जा रहा है।
- उन्होंने कहा कदिलहन उत्पादन को बढ़ावा देने के लयि राज्य सरकार द्वारा कसिानों से अरहर एवं उड़द की खरीदी समर्थन मूल्य 6600 रुपए की जगह 8000 रुपए प्रतक्विंटिल की दर पर की जा रही है।
- राज्य सरकार के प्रयासों से पछिले वर्षों में राज्य में दलहन के रकबे एवं उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है और आज 11 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में दलहन फसलों की खेती की जा रही है, जसिके आगामी दो वर्षों में बढ़कर 15 लाख हेक्टेयर होने की उम्मीद है।

of-pulses-crops